
Onkarapuktam Muktisadhanartham Shivarchanopadesham 1

ओङ्कारप्रोक्तं मुक्तिसाधनार्थं शिवार्थनोपदेशम् १

Document Information

Text title : Onkarapuktam Muktisadhanartham Shivarchanopadesham 1

File name : shivArchanopadesham1muktisAdhanArthaM.itx

Category : shiva, shivarahasya, upadesha, advice

Location : doc_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 13 | 515.1-525||

Latest update : May 3, 2024

Send corrections to : [sanskrit at cheerful dot c om](mailto:sanskrit@cheerfuldotc.com)

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 3, 2024

sanskritdocuments.org

ओङ्कारप्रोक्तं मुक्तिसाधनार्थं शिवार्थनोपदेशम् १



कश्यप उवाच -

पुरोङ्कारं मूर्तिमन्तं शिवध्यानपरायणम् ॥ ५१४ ॥

ब्रह्मविष्णुवाद्यो देवा दृष्ट्वा प्रोचुर्मुमुक्षुवः ।

देवा उचुः

त्वमोङ्कारोऽस्य तस्तत्त्वं त्वयैव ज्ञायते ततः ॥ ५१५ ॥

किं ध्येयं सततं मुक्त्यै तद्विचार्य वदस्व नः ।

श्री ओङ्कार उवाच -

मोक्षार्थं शिव ऐवैको ध्येयः सर्वैरुर्निशम् ॥ ५१६ ॥

सर्वमन्यत्परित्यज्य सादरं भक्तिपूर्वकम् ।

यः पिता भवतां देवाः स ऐव शिव उच्यते ॥ ५१७ ॥

स ऐव पार्वतीनाथ यः सर्वसुरसत्तमः ।

स ऐव श्रीमहादेवः स ऐव त्रिपुरान्तकः ॥ ५१८ ॥

स ऐव वेदजनकः स ऐवान्यकसूदनः ।

सं ऐव विष्णुसंछर्ता स ऐव मदनान्तकः ॥ ५१९ ॥

स ऐव ब्रह्मसंछर्ता स ऐवेन्द्रविनाशकः ।

स ऐव ममसंछर्ता स ऐवाग्निशासकः ॥ ५२० ॥

ऐतादृशं शिवं मत्वा सख्यिदानन्दलक्षणम् ।

पूजयध्वं प्रयत्नेन मुक्तयर्थं सर्वसाधनैः ॥ ५२१ ॥

शिवार्थनं शिवध्यानं शिवनामानुकीर्तनम् ।

शिवक्षेत्रनिवासश्च मुक्तिसाधनमुच्यते ॥ ५२२ ॥

शिवार्थनं य विधिवन्नावेदान्तसम्मतम् ।

तन्मोक्षदमिति प्रोक्तं मलेशेनातितत्त्वतः ॥ ५२३ ॥

--

पुरा पृष्टो मडादैवः शिवया ज्ञानरूपया ।

किं मोक्षमिति प्रीत्या तदाऽऽलु भगवाञ्छिवः ॥ पर४ ॥

श्रीसदाशिव उवाच -

शिवे मर्त्यनं ध्यानं भन्नाम्नामनुकीर्तनम् ।

मदिष्टक्षेत्रवासश्च मुक्तिसाधनमक्षतम् ॥ पर५ ॥

॥ एति शिवरुडस्थान्तर्गते ओङ्कारप्रोक्तं मुक्तिसाधनार्थं शिवार्थनोपदेशं १ सम्पूर्णम् ॥


- ॥ श्रीशिवरुडस्थम् उवाच्यः सप्तमांशः । अध्यायः १३ । ५१५ । १-५२५ ॥

- .. shrIshivarahasyam ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 13 . 515.1-525 ..


Notes:

Brahmā ब्रह्मा, Viṣṇu विष्णु et al Deva-s देवः observe the Form of Omkāra ओङ्कार engaged in Śivadhyaṇa शिवध्यान and are curious to know from him about who should be worshiped in order to attain Mukti मुक्ति. Omkāra ओङ्कार delivers the upadeśa उपदेश about Cultivating worship of Śiva शिव; and, that Śivārcanam शिवार्चनम्, Śivadhyaṇam शिवध्यानम्, Śivanāmānukīrtanam शिवनामानुकीर्तनम् and Śivakṣetranivāsa शिवक्षेत्रनिवास is the means to Liberation (Muktisādhana मुक्तिसाधन). He conveys that upon being requested by Śivā शिव, the same was also told by Śiva शिव.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

——
Onkaraproktaṃ Muktisādhanaṃ Shivarcanopadeśam 1

pdf was typeset on May 3, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

